अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 12-Issue 03, (July-Sep 2024)

मौर्य साम्राज्य के शासन तंत्र और अशोक के धम्म की भूमिका

प्रमोद कुमार मीना

सहायक आचार्य- इतिहास

राजकीय कन्या महाविद्यालय, कटकड़ (करौली) राज.

संक्षेप

मौर्य साम्राज्य, प्राचीन भारत का पहला केंद्रीकृत और संगठित साम्राज्य, चंद्रगुप्त मौर्य द्वारा स्थापित किया गया था। यह शासन तंत्र चाणक्य के "अर्थशास्त्र" के सिद्धांतों पर आधारित था, जिसने शासन को कुशल और प्रभावी बनाया। इस तंत्र में राजा सर्वोच्च शासक होता था और उसके अधीन एक संगठित प्रशासनिक ढाँचा कार्य करता था, जिसमें मंत्री, राज्यपाल, और अधिकारी शामिल थे। कर संग्रह, न्याय प्रणाली, और सैन्य संगठन जैसे पहलू साम्राज्य की स्थिरता और समृद्धि सुनिश्चित करते थे। यह तंत्र न केवल प्रशासनिक कुशलता का प्रतीक था, बल्कि एकीकृत भारत की कल्पना को भी साकार करता था। सम्राट अशोक, मौर्य साम्राज्य के महान शासक, ने शासन में नैतिकता और सहिष्णुता को स्थापित किया। कलिंग युद्ध के बाद अशोक ने अहिंसा, करुणा, और धार्मिक सहिष्णुता पर आधारित "धम्म" को अपनाया। धम्म ने शासन तंत्र को मानवीय और जनकल्याणकारी दिशा दी। अशोक ने शिलालेखों और स्तंभों के माध्यम से धम्म का प्रचार किया और जनकल्याण के लिए अस्पताल, सड़कें, कुएं, और धर्मशालाओं का निर्माण कराया। धम्म ने न केवल भारतीय समाज में नैतिकता और समानता को बढ़ावा दिया, बल्कि बौद्ध धर्म को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसारित किया। मौर्य शासन तंत्र और अशोक के धम्म ने भारतीय प्रशासन और संस्कृति को नई ऊँचाई दी। यह न केवल तत्कालीन समाज में स्थिरता और नैतिकता का प्रतीक था, बल्कि आने वाले समय के लिए भी प्रेरणादायक बना।

मुख्य बिन्दुः- मौर्य साम्राज्य, धम्म, चंद्रगुप्त मौर्य, अर्थशास्त्र

परिचय

मौर्य साम्राज्य, जो लगभग 321 ईसा पूर्व में चंद्रगुप्त मौर्य द्वारा स्थापित किया गया, प्राचीन भारत का पहला बड़ा साम्राज्य था। इस साम्राज्य का शासन तंत्र अत्यंत संगठित और कुशल था, जो चाणक्य (कौटिल्य) के "अर्थशास्त्र" जैसे ग्रंथों से प्रेरित था। यह साम्राज्य एक केंद्रीकृत प्रशासनिक प्रणाली पर आधारित था, जिसमें राजा सर्वोच्च शासक होता था और उसके अधीन मंत्रियों, राज्यपालों, और अधिकारियों की एक विस्तृत श्रृंखला कार्य करती थी। साम्राज्य को विभिन्न प्रांतों में विभाजित किया गया

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 12-Issue 03, (July-Sep 2024)

था, जिन्हें "महामात्र" नामक अधिकारी प्रशासित करते थे। शासन प्रणाली में न्याय, कर संग्रह, सैन्य संगठन, और जनकल्याण पर विशेष ध्यान दिया गया था। यह व्यवस्था न केवल साम्राज्य के स्थायित्व को सुनिश्चित करती थी, बल्कि इसे एक सशक्त और समृद्ध राज्य के रूप में भी स्थापित करती थी।

मौर्य साम्राज्य के महान शासक अशोक (273-232 ईसा पूर्व) ने अपने शासन में "धम्म" की अवधारणा को लागू किया, जो उनके शासन का एक महत्वपूर्ण पहलू था। कलिंग के भीषण युद्ध के बाद अशोक ने अहिंसा, करुणा, और नैतिकता को अपने शासन का मूल सिद्धांत बनाया। उनका "धम्म" केवल धार्मिक सहिष्णुता तक सीमित नहीं था, बल्कि यह एक सामाजिक और नैतिक मार्गदर्शन भी था, जो नागरिकों के जीवन को सुधारने और साम्राज्य में एकता बनाए रखने का उद्देश्य रखता था। अशोक ने अपने धम्म के प्रचार के लिए शिलालेखों और स्तंभों का निर्माण कराया, जिनमें अहिंसा, पशु कल्याण, और जनकल्याण के संदेश उत्कीर्ण थे। धम्म ने मौर्य शासन को नैतिकता और सहिष्णुता के आधार पर एक अनुकरणीय शासन प्रणाली के रूप में स्थापित किया। अशोक का धम्म न केवल मौर्य साम्राज्य के प्रशासनिक तंत्र का केंद्रबिंदु बना, बल्कि यह भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और नैतिक विरासत के रूप में भी अंकित है।

मौर्य साम्राज्य की स्थापना और चंद्रगुप्त मौर्य का योगदान।

मौर्य साम्राज्य की स्थापना प्राचीन भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना थी, जिसने एकीकृत और संगठित शासन प्रणाली की नींव रखी। यह साम्राज्य लगभग 321 ईसा पूर्व में चंद्रगुप्त मौर्य द्वारा स्थापित किया गया, जिन्होंने अपनी दूरदर्शिता और साहस से भारत के पहले बड़े साम्राज्य का निर्माण किया। मौर्य साम्राज्य की स्थापना की पृष्ठभूमि में नंद वंश के अत्याचार और अराजकता से त्रस्त समाज का महत्वपूर्ण योगदान था। चंद्रगुप्त ने चाणक्य (कौटिल्य) के मार्गदर्शन में नंद वंश को पराजित किया और पाटलिपुत्र को मौर्य साम्राज्य की राजधानी बनाया। इस साम्राज्य ने लगभग पूरे भारतीय उपमहाद्वीप को एकीकृत किया, जिसमें उत्तर में कश्मीर से लेकर दक्षिण में कर्नाटक और पश्चिम में बलूचिस्तान से लेकर पूर्व में बंगाल तक के क्षेत्र शामिल थे।

चंद्रगुप्त मौर्य का योगदान केवल सैन्य विजय तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने एक सशक्त और सुव्यवस्थित प्रशासनिक प्रणाली की भी स्थापना की। चाणक्य के "अर्थशास्त्र" के सिद्धांतों पर आधारित शासन प्रणाली ने केंद्रीय और प्रांतीय प्रशासन के बीच एक संतुलन स्थापित किया। कर संग्रह, न्याय प्रणाली, और जनकल्याणकारी नीतियाँ चंद्रगुप्त के शासन की विशेषताएँ थीं। उन्होंने एक विशाल और संगठित सेना का निर्माण किया, जिसने न केवल साम्राज्य की सुरक्षा सुनिश्चित की, बल्कि इसकी सीमाओं

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 12-Issue 03, (July-Sep 2024)

का विस्तार भी किया। सिकंदर के सेनापतियों के साथ हुई लड़ाइयों में विजय और सेल्यूकस निकेटर के साथ मैत्री संधि ने उनकी कूटनीतिक क्षमता को दर्शाया।

चंद्रगुप्त मौर्य ने न केवल मौर्य साम्राज्य की नींव रखी, बल्कि एक संगठित और प्रगतिशील शासन प्रणाली की स्थापना की, जिसने भारतीय इतिहास में एक नई दिशा प्रदान की। उनकी दूरदर्शिता और नेतृत्व ने न केवल तत्कालीन भारत को एकीकृत किया, बल्कि एक शक्तिशाली साम्राज्य के रूप में इसे विश्व मंच पर स्थापित किया।

चाणक्य (कौटिल्य) और "अर्थशास्त्र" का मौर्य शासन तंत्र पर प्रभाव।

चाणक्य, जिन्हें कौटिल्य और विष्णुगुप्त के नाम से भी जाना जाता है, मौर्य साम्राज्य की स्थापना और इसके शासन तंत्र के विकास में केंद्रीय भूमिका निभाने वाले एक अद्वितीय राजनीतिक विचारक और रणनीतिकार थे। उनका ग्रंथ "अर्थशास्त्र" मौर्य शासन तंत्र का एक महत्वपूर्ण आधार बना। "अर्थशास्त्र" न केवल एक राजनैतिक और आर्थिक ग्रंथ है, बल्कि यह शासन, प्रशासन, कूटनीति, युद्ध, न्याय, और समाज के प्रबंधन के लिए एक व्यापक मार्गदर्शिका भी है। चाणक्य ने इसे चंद्रगुप्त मौर्य के शासन की नीतियों को निर्देशित करने और एक संगठित शासन प्रणाली स्थापित करने के लिए लिखा।

चाणक्य के "अर्थशास्त्र" ने मौर्य शासन तंत्र को एक केंद्रीकृत और सुव्यवस्थित रूप प्रदान किया। इसमें राजा को सर्वोच्च शासक माना गया, जो धर्म और नैतिकता के अनुसार शासन करता था। "अर्थशास्त्र" के सिद्धांतों के आधार पर एक संगठित प्रशासनिक ढांचा तैयार किया गया, जिसमें विभिन्न मंत्री, अधिकारी, और राज्यपालों की भूमिकाएँ स्पष्ट रूप से परिभाषित थीं। कर संग्रह प्रणाली, व्यापार और वाणिज्य का नियमन, और राज्य की आर्थिक समृद्धि सुनिश्चित करने के लिए आर्थिक नीतियाँ "अर्थशास्त्र" के निर्देशों पर आधारित थीं। इसमें न्याय प्रणाली को विशेष महत्व दिया गया, जिसमें अपराधों के लिए दंड का प्रावधान और समाज में न्याय की स्थापना शामिल थी।

चाणक्य ने मौर्य साम्राज्य को कूटनीति और सैन्य रणनीतियों के माध्यम से मजबूत किया। "अर्थशास्त्र" में "सप्तांग सिद्धांत" (राज्य के सात अंग) और "मंडल सिद्धांत" (राजनीतिक कूटनीति) जैसे सिद्धांत शामिल थे, जो राज्य के विस्तार और सुरक्षा के लिए उपयोगी साबित हुए। इस प्रकार, चाणक्य और "अर्थशास्त्र" ने मौर्य शासन तंत्र को एक सुदृढ़, संगठित और प्रगतिशील स्वरूप दिया, जिसने भारतीय प्रशासन और राजनीति को एक नई दिशा प्रदान की।

मौर्य साम्राज्य का शासन तंत्र

मौर्य साम्राज्य का शासन तंत्र प्राचीन भारत के इतिहास में सबसे संगठित और कुशल प्रशासनिक व्यवस्था के रूप में जाना जाता है। यह एक केंद्रीकृत प्रणाली थी, जिसमें राजा को सर्वोच्च शासक और सत्ता का

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 12-Issue 03, (July-Sep 2024)

मुख्य स्रोत माना गया था। राजा के अधीन एक मंत्रिपरिषद कार्य करती थी, जिसमें मंत्रियों, प्रमुख अधिकारियों और सैन्य जनरलों का समावेश था। साम्राज्य को प्रशासनिक सुविधा के लिए विभिन्न प्रांतों (जनपदों) में विभाजित किया गया था, जिन्हें "महामात्र" या राज्यपाल प्रशासित करते थे। प्रांतों के अधीन छोटे जिलों और गांवों का प्रशासन स्थानीय अधिकारियों और ग्राम प्रधानों के माध्यम से होता था।

राजस्व और कर संग्रह की व्यवस्था मौर्य शासन तंत्र की मुख्य विशेषताओं में से एक थी। कृषि उपज, व्यापार, और उद्योगों पर कर लगाया जाता था, जिससे साम्राज्य की आर्थिक स्थिरता बनी रहती थी। सेना का संगठन और सुरक्षा प्रणाली भी अत्यंत मजबूत थी, जिसमें पैदल सेना, घुड़सवार सेना, हाथी दल, और रथ दल शामिल थे। न्याय प्रणाली में अपराधों के लिए कठोर दंड का प्रावधान था, जिससे सामाजिक व्यवस्था और कानून का पालन सुनिश्चित होता था।

मौर्य साम्राज्य की प्रशासनिक दक्षता में चाणक्य के "अर्थशास्त्र" की शिक्षाओं का महत्वपूर्ण योगदान था। यह शासन तंत्र न केवल राजनीतिक स्थिरता और आर्थिक समृद्धि को बनाए रखने में सक्षम था, बल्कि इसने कला, संस्कृति, और जनकल्याण को भी बढ़ावा दिया। मौर्य शासन तंत्र ने भारतीय उपमहाद्वीप में एक सुदृढ़ और संगठित शासन प्रणाली की नींव रखी, जो आने वाली सभ्यताओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी।

अशोक का शासन और "धम्म" की अवधारणा

अशोक का शासन मौर्य साम्राज्य के स्वर्णिम युग के रूप में जाना जाता है, जो शांति, नैतिकता, और जनकल्याण पर आधारित था। कलिंग युद्ध (261 ईसा पूर्व) के बाद अशोक ने हिंसा का त्याग किया और बौद्ध धर्म के आदर्शों को अपनाते हुए "धम्म" की अवधारणा को अपने शासन का मूल सिद्धांत बनाया। "धम्म" न केवल धार्मिक उपदेश था, बल्कि यह सामाजिक और नैतिक मूल्यों का एक ऐसा मार्गदर्शक सिद्धांत था, जो अशोक के प्रशासन और उनकी नीतियों का आधार बना। अशोक के धम्म में अहिंसा, करुणा, और सत्य के सिद्धांत प्रमुख थे। उन्होंने धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा दिया और साम्राज्य के सभी नागरिकों को अपने धर्म और विश्वास के पालन की स्वतंत्रता दी। उनके शासन में धर्म, जाति, और सामाजिक स्थिति के आधार पर किसी प्रकार का भेदभाव नहीं था।

अशोक के धम्म में जनकल्याण और पर्यावरण संरक्षण को भी प्रमुखता दी गई। उन्होंने मानव और पशुओं के लिए चिकित्सा सुविधाओं की स्थापना की, सड़कों और कुओं का निर्माण कराया, और धर्मशालाओं की व्यवस्था की। पशु वध और हिंसा को रोकने के लिए उन्होंने कड़े कदम उठाए। अशोक ने अपने धम्म को साम्राज्य के विभिन्न हिस्सों में प्रचारित करने के लिए शिलालेखों और स्तंभों का निर्माण कराया, जिन

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 12-Issue 03, (July-Sep 2024)

पर उनके नैतिक उपदेश अंकित थे। ये शिलालेख उनकी नीतियों और धम्म के प्रचार का एक अनूठा माध्यम बने। अशोक के धम्म ने समाज में नैतिकता, समानता, और सामुदायिक भावना को बढ़ावा दिया। अशोक का धम्म उनके शासन को न केवल भारतीय इतिहास में, बल्कि विश्व इतिहास में भी एक विशिष्ट स्थान प्रदान करता है। यह नैतिक और सहिष्णु शासन का एक आदर्श उदाहरण है, जो जनकल्याण और शांति के लिए समर्पित था। उनकी धम्म नीतियों ने न केवल उनके साम्राज्य में स्थिरता और एकता स्थापित की, बल्कि बौद्ध धर्म के माध्यम से उनकी विचारधारा को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रचारित किया। अशोक का धम्म आज भी सामाजिक और नैतिक शासन के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

धम्म का प्रशासनिक और सामाजिक प्रभाव

अशोक का "धम्म" न केवल नैतिक और धार्मिक विचारों का संकलन था, बल्कि इसका प्रशासनिक व्यवस्था पर भी गहरा प्रभाव पड़ा। अशोक ने अपने धम्म के सिद्धांतों को प्रशासन का अभिन्न हिस्सा बनाया, जिससे शासन अधिक नैतिक और संवेदनशील बन सका। धम्म के माध्यम से अशोक ने अहिंसा, करुणा, और धार्मिक सहिष्णुता जैसे मूल्यों को प्रशासनिक तंत्र में शामिल किया। उन्होंने "धम्म महामात्र" नामक विशेष अधिकारियों की नियुक्ति की, जिनका कार्य था धम्म के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ जनता की शिकायतों को सुनना और उनका समाधान करना। ये अधिकारी धार्मिक, सामाजिक, और आर्थिक क्षेत्रों में लोगों को समर्थन और मार्गदर्शन प्रदान करते थे।

धम्म के तहत अशोक ने युद्ध और हिंसा को हतोत्साहित किया और प्रशासन को जनकल्याण की ओर केंद्रित किया। उन्होंने सार्वजनिक कार्यों, जैसे अस्पतालों, सड़कों, कुओं, और धर्मशालाओं के निर्माण को प्राथमिकता दी। शिलालेखों और स्तंभों के माध्यम से अपने धम्म के संदेशों को साम्राज्य के हर कोने तक पहुँचाया, जिससे नीतियों में पारदर्शिता और जनता में जागरूकता आई। धम्म के सिद्धांतों ने प्रशासन को मानवीय दृष्टिकोण अपनाने और जनता के साथ संवाद स्थापित करने में मदद की।

अशोक के धम्म ने समाज में नैतिकता, समानता, और सहिष्णुता को बढ़ावा दिया। यह एक ऐसा सामाजिक मार्गदर्शक सिद्धांत बन गया, जिसने जाति, धर्म, और सामाजिक वर्ग के भेदभाव को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। धम्म के माध्यम से अशोक ने अहिंसा और करुणा का प्रचार किया, जिससे समाज में हिंसा और शोषण की प्रवृत्तियों में कमी आई। धार्मिक सहिष्णुता को प्रोत्साहन देकर अशोक ने सभी धर्मों के प्रति समानता और सम्मान की भावना विकसित की। यह उनके शिलालेखों में स्पष्ट झलकता है, जहाँ उन्होंने सभी धर्मों के कल्याण और उनके शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की आवश्यकता पर जोर दिया। धम्म ने समाज में नैतिक शिक्षा को बढ़ावा दिया, जिसमें सत्य, ईमानदारी, और दयालुता जैसे गुणों को प्राथमिकता दी गई। पशु कल्याण और पर्यावरण संरक्षण पर उनके प्रयासों ने समाज में संवेदनशीलता

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 12-Issue 03, (July-Sep 2024)

और जिम्मेदारी की भावना विकसित की। धम्म के सिद्धांतों ने पारिवारिक और सामाजिक जीवन को भी प्रभावित किया, जहाँ शांति, सद्भाव, और सहयोग पर बल दिया गया। इस प्रकार, अशोक का धम्म न केवल प्रशासनिक सुधार का आधार बना, बल्कि यह समाज के नैतिक और सांस्कृतिक विकास का भी एक महत्वपूर्ण उपकरण साबित हुआ।

मौर्य शासन और धम्म का सांस्कृतिक प्रभाव

मौर्य शासन, विशेष रूप से सम्राट अशोक के शासनकाल में, भारतीय उपमहाद्वीप के सांस्कृतिक और धार्मिक परिदृश्य को गहराई से प्रभावित किया। अशोक के धम्म ने भारतीय समाज में नैतिकता और सहिष्णुता को बढ़ावा दिया, जिसे शिलालेखों और स्तंभों के माध्यम से व्यापक रूप से प्रचारित किया गया। अशोक ने अपने धम्म के संदेशों को जनता तक पहुँचाने के लिए साम्राज्य भर में ब्राह्मी लिपि और अन्य स्थानीय भाषाओं में शिलालेख और स्तंभ स्थापित करवाए। इन पर अहिंसा, करुणा, धार्मिक सहिष्णुता, और जनकल्याण के संदेश अंकित थे। ये शिलालेख और स्तंभ न केवल प्रशासनिक नीति के दस्तावेज थे, बल्कि नैतिक शिक्षाओं और सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देने वाले माध्यम भी थे। इनमें से कई स्तंभ, जैसे कि सारनाथ और लौरिया नंदनगढ़ के स्तंभ, स्थापत्य कला और शिल्पकला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

अशोक के धम्म ने स्थापत्य कला और बौद्ध धर्म के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके शासनकाल में कई स्तूप, विहार, और मठों का निर्माण हुआ। विशेष रूप से, सारनाथ का धमेख स्तूप और सांची के स्तूप उनके स्थापत्य कौशल और धार्मिक समर्पण का प्रतीक हैं। बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए अशोक ने इसे न केवल अपने साम्राज्य में समर्थन दिया, बल्कि अन्य देशों में भी इसके प्रचार को प्रोत्साहित किया। उन्होंने बौद्ध धर्म का अंतरराष्ट्रीय प्रचार-प्रसार करने के लिए अपने पुत्र महेंद्र और पुत्री संघमित्रा को श्रीलंका भेजा, जहाँ उन्होंने बौद्ध धर्म की स्थापना की। इसके अतिरिक्त, बौद्ध धर्म का प्रसार मध्य एशिया, दक्षिण-पूर्व एशिया, और चीन तक हुआ, जो अशोक की वैश्विक दृष्टि और उनकी धम्म नीति का परिणाम था।

अशोक के धम्म ने भारतीय संस्कृति को एक समावेशी और सहिष्णु दृष्टिकोण प्रदान किया। उनके शासनकाल में धर्म और नैतिकता को जनकल्याण और प्रशासनिक नीतियों का अभिन्न अंग बनाया गया, जिसने भारतीय समाज को नैतिकता और सांस्कृतिक समृद्धि की दिशा में अग्रसर किया। इस प्रकार, मौर्य शासन और अशोक के धम्म का सांस्कृतिक प्रभाव केवल भारत तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह वैश्विक स्तर पर भारतीय संस्कृति और बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार का एक अभिन्न हिस्सा बना।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 12-Issue 03, (July-Sep 2024)

निष्कर्ष

मौर्य साम्राज्य के शासन तंत्र और अशोक के धम्म ने भारतीय इतिहास में एक अद्वितीय स्थान स्थापित किया। मौर्य शासन तंत्र ने एक केंद्रीकृत और संगठित प्रशासनिक प्रणाली की नींव रखी, जो न्याय, कर संग्रह, और सैन्य संगठन जैसे पहलुओं में अद्वितीय थी। यह तंत्र चाणक्य के "अर्थशास्त्र" के सिद्धांतों पर आधारित था, जिसने शासन को कुशल, पारदर्शी, और सशक्त बनाया। अशोक ने इस शासन तंत्र को नैतिकता और सहिष्णुता के साथ जोड़ा, जिससे मौर्य साम्राज्य केवल राजनीतिक शक्ति का केंद्र नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों का प्रतीक बन गया। अशोक का धम्म, जो अहिंसा, करुणा, और धार्मिक सहिष्णुता पर आधारित था, मौर्य शासन का एक महत्वपूर्ण पहलू बना। उन्होंने धम्म के माध्यम से समाज में नैतिकता, समानता, और जनकल्याण को बढ़ावा दिया। शिलालेखों और स्तंभों के माध्यम से धम्म का प्रसार, जनकल्याणकारी नीतियाँ, और धर्मशालाओं, सड़कों, और अस्पतालों का निर्माण अशोक की दूरदर्शिता और मानवीय दृष्टिकोण को दर्शाता है। उनके धम्म ने बौद्ध धर्म को न केवल भारतीय समाज में, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मौर्य शासन तंत्र और अशोक के धम्म ने प्रशासन और समाज को सहिष्णुता, नैतिकता, और स्थिरता की नई दिशा दी। इनकी नीतियों का प्रभाव न केवल उनके काल में, बल्कि आने वाले समय में भी भारतीय संस्कृति, राजनीति, और समाज पर गहराई से पड़ा। यह साम्राज्य भारत की प्रशासनिक और सांस्कृतिक धरोहर का आधार बना, जिसका प्रभाव आज भी प्रासंगिक है।

संदर्भ

1. रे, एच. पी. (2020)। मौर्य साम्राज्य। ऑक्सफोर्ड वर्ल्ड हिस्ट्री ऑफ एम्पायर: खंड दो: साम्राज्यों का इतिहास, 198।
2. थापर, आर. (2006)। प्रारंभिक भारत में मौर्य साम्राज्य। ऐतिहासिक अनुसंधान, 79(205), 287-305।
3. सेन, सी. टी. (2022)। अशोक और मौर्य वंश: प्राचीन भारत के महानतम साम्राज्य का इतिहास और विरासत। रेक्शन बुक्स।
4. थापर, आर. (2009)। अशोक—एक पुनरावलोकन। आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, 31-37।
5. शाही, डी., और शाही, डी. (2019)। कौटिल्य बुद्ध से मिलते हैं: अशोक के मौर्य साम्राज्य की अर्थशास्त्र और नैतिक राजनीति। कौटिल्य और गैर-पश्चिमी आईआर थ्योरी, 57-93।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 8.789 Volume 12-Issue 03, (July-Sep 2024)

6. मात्सुक, ए. एम. (2005)। अशोक मौर्य का अध्ययन: उनके बौद्ध धर्म अपनाने ने भारत के इतिहास को कैसे प्रभावित किया। कैलिफोर्निया स्टेट यूनिवर्सिटी, डोमिंगुएज हिल्स।

7. रमेश, एस. (2023)। मौर्य वंश: 332 ईसा पूर्व से 184 ईसा पूर्व। भारत के आर्थिक विकास की राजनीतिक अर्थव्यवस्था: 5000BC से 2022AD, खंड I: सिंधु सभ्यता से पहले से लेकर अलेक्जेंडर महान तक (पृष्ठ 177-220)। चैम: स्प्रिंगर इंटरनेशनल पब्लिशिंग।

8. हरित, ए. (2022)। मौर्य साम्राज्य में धर्म और शक्ति की रणनीतिक गतिशीलता: एक गेम-थ्योरिटिक विश्लेषण। SSRN पर उपलब्ध।

9. सत्संगी, ए. (2022)। प्राचीन भारतीय प्रबंधन: नेतृत्व, कॉर्पोरेट प्रशासन और प्रेरणा। अकादमिक गुरु पब्लिशिंग हाउस।

10. हचिसन, पी. एम. (2009)। प्राचीन भारत में अशोक की छवियाँ। इन्क्वायरीज़ जर्नल, 1(11)।

11. शांग, एच. (2023)। प्राचीन दक्षिण एशिया का राज्य और अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली। पीपल (जेन), स्टेट एंड इंटर-स्टेट रिलेशन्स: ए साइको-कल्चुरोलॉजिकल अप्रोच (पृष्ठ 299-320)। सिंगापुर: स्प्रिंगर नेचर सिंगापुर।

12. श्लिक्टमैन, के. (2016)। भारत का शांति इतिहास: अशोक मौर्य से महात्मा गांधी तक। विज बुक्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड।